बाहुबलि-त्थोत्तं

णमामि भावणासहिदं, रिसहदेव जिणेस्सरं।
करेमि बाहुबलि-त्थोत्तं, सव्वकज्जस्स सिद्धिए।।

हे रिसहपुत्त पहु बाहुबली, सुणंदा देवि य मादु भली।
भरदेस्सर चक्की बंधु तुह, बहिणी बंभी सुंदरी य सुणह।। 1 ।।

हे तक्खसिला णिव बाहुबली, हे पोयणपुर णिव बाहुबली।
जय कम्मे सूरा बाहुबली, जय धम्मे सूरा बाहुबली।। 2 ।।

अहिमाणमेरु हे बाहुबली, चक्कीमयभंजण बाहुबली।
हे दिट्ठीजुद्ध जय बाहुबली, हे णीरजुद्ध जय बाहुबली।। 3 ।।

हे मल्लजुद्ध जय बाहुबली, पुण धम्मजुद्ध जय बाहुबली।
हे जगजेदा पहु बाहुबली, पुण आदविजेदा बाहुबली।। 4 ।।

णिस्सल्लो मल्लो बाहुबली, देहादिविरत्तो बाहुबली।
वेरग्गमुत्ति जय बाहुबली, जय महातवस्सी बाहुबली।। 5 ।।

जय तिहुवणतिलयं बाहुबली, जगदस्स अहारो बाहुबली।
जय संतिकंतिजुद बाहुबली, जय संतिकंतिपद बाहुबली।। 6 ।।

बाहुबली तुह णिच्छ बली, लोए ण हि अण्णो को वि बली।
तुह बाहुबली ण हि आदबली, तुह णाणबली तुह झाणबली।। 7 ।।

तुह लोए मंगल बाहुबली, तुह लोए उत्तम बाहुबली।
तुह लोए सरणं बाहुबली, पणमउं चरणं तुह बाहुबली।। 8 ।।

तुह णंतबली णिग्गंथबली, झाणणंतर केवली सु बली।
जय सिद्धसिला णिव बाहुबली, जय जय जय जय जय बाहुबली।। 9 ।।

हं पणमउं पद तुह बाहुबली, हं पि होस्सामि बाहुबली।
जो झायदि मणसा बाहुबली, सो होस्सदि णिच्छय बाहुबली।। 10 ।।

इदं बाहुबलि-त्थोत्तं, जो पइदिणं पढिज्जदि।
विणस्सदि सव्वदुक्खाइं, सव्वसुक्खं य पावदि।।

–डॉ. वीर सागर जैन

आरदी बाहुबली सामिणो

जय बाहुबली भगवो, सामि जय बाहुबली भगवो।
आदबली जय णाणबली जय, झाणबली भगवो।। टेक।।

रिसहदेवसुद तुम्हे आसी, माद सुणंदा जी।
सुदतियबंधुअण्ण परिपुरजण, सव्वं भिण्ण गिणो।। 1 ।।

तुह देहादो भिण्ण णाणमय, चेदणतच्च मणो।
रागरोस परिहरिदा, तम्हा पूज्ज अहो।। 2 ।।

दिट्ठीमल्लजलजुद्धे, भरदेस्सर विजिदो।
धम्मजुद्ध किय रागरोस पुण, तुम्हेहि विजिदा।। 3 ।।

कम्मे सूरा धम्मे सूरा, मुणिदिक्खा धरिआ।
धम्मचक्की मुणि घोरतवेण हि, केवलणाण जिणो।। 4 ।।

सव्वकम्मरय चूरिय, पढमं मोक्ख गओ।
सव्वसुरासुरवंदिद, तिहुवणतिलय अहो।। 5 ।।

गोम्मटेस पडिमा पहु तुज्झ, चामुंडराय करी।
भावभत्तिगुण धारिय, अम्हे णमण करी।। 6 ।।

विस्ससंति हो आदसंति हो, हे पहु बाहुबली।
बोहिलाह हो, सुगइगमण हो, अम्हे सरण गही।। 7 ।।

अर्थ :– बाहुबली भगवान् की जय हो, बाहुबली स्वामी की जय हो। वे वस्तुतः आत्मबली हैं, ज्ञानबली हैं और ध्यानबली हैं। उनकी जय हो।

हे भगवान् बाहुबली! आप प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र हो, आपकी माता का नाम सुनन्दा है, परन्तु वस्तुतः आपने माता, पिता, स्त्री, पुत्र आदि सर्व परिजन-पुरजनों से स्वयं को अलग कर लिया है और स्वयं को देहादि से भी भिन्न ज्ञानमय चैतन्य तत्त्व समझकर समस्त रागद्वेषादि भावों का त्याग कर दिया, इसलिए आप पूजनीय माने जाते हैं।

हे बाहुबली! आपने दृष्टियुद्ध, जलयुद्ध और मल्लयुद्ध में भरतचक्रवर्ती को जीता था और बाद में धर्मयुद्ध में भी अपने समस्त रागद्वेषादि भावों को भी जीत लिया था। आप 'कम्मे सूरा' ही नहीं, 'धम्मे सूरा' भी हो गये। मुनिदीक्षा लेकर धर्मचक्रवर्ती बन गये। घोर तप करके आपने केवलज्ञान को प्राप्त कर लिया।

हे भगवन् बाहुबली! इसके बाद आपने सर्व शेषकर्मों को भी क्षय करके मोक्ष पद को प्राप्त कर लिया। आप इस युग के सर्वप्रथम मोक्षगामी बन गये। समस्त सुरासुरेन्द्रों ने आपकी वन्दना की ओर आप त्रिभुवन-तिलक हो गए।

हे प्रभो! आपकी जो विशाल अनुपम प्रतिमा महाराज चामुंडराय ने बनवाई है उसे हम भावभक्ति से परिपूर्ण होकर प्रणाम करते हैं और कामना करते हैं कि सम्पूर्ण विश्व में शान्ति हो, हमें भी आत्मशान्ति मिले, बोधिलाभ हो और समाधिपूर्वक सुगतिगमन हो।

–डॉ. वीर सागर जैन